हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL10**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): अक्षय तेम्रवाल

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	3	0	9	2	2	1

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

प्रयास संतोषजनक है। उत्तरों को और बेहतर बनाने का प्रयत्न करें।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 124

टिप्पणी (Remarks):

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) विरहा बुरहा जिनि कहौ, बिरहा है सुलितान।
जिस घटि विरह न संचरै, सो घट सदा मसान॥

सन्दर्भ:- प्रस्तुत दोहा कबीर दास जी रचित है, जिसका संकलन 'कबीर ग्रंथावली' में किया गया है।

प्रसंग:- प्रस्तुत दोहा 'विरह के अंग' से उद्धृत है।

व्याख्या:- कबीर अपने प्रभु के विरह में व्याकुल हैं, वे विरह के महत्व को बताते हुए कहते हैं कि विरह कोई असंतोष जनक या अकाम्य नहीं है अपितु विरह एक राजा के समान है। विरह होने पर ही मिलन का संतोष होता है। जिस मनुष्य के अन्दर अपने प्रभु से मिलने के लिए विरह न हो उसका जीवन व्यर्थ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेषताएँ

(1) काव्यरूप : मुक्तक

(2) छन्द : दोहा

(3) भाषा : सधुक्कड़ी (पंचमेल खिचड़ी)

(4) रस : शृंगार (विरह) रस

(5) गुण : माधुर्य गुण

(6) दर्शन : शंकर के अद्वैतवाद तथा इस्लाम के एकेश्वरवाद का प्रभाव

(7) भक्ति मार्ग में विरह के महत्व को बतलाया है।

(8)

10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) तंत्रीनाद, कवित्त-रस, सरस राग, रति-रंग।
अनबूड़े बूड़े, तिरे जे बूड़े सब अंग।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत दोहा बिहारी कृत 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

प्रसंग :- कवि इस दोहे में काव्य के महत्व को उद्घाटित कर रहे हैं।

व्याख्या : कवि कहता है कि काव्य का महत्व समाज के कल्याण हेतु है। काव्य के रस से समाज के सभी वर्ग बच्चे, जवान और बूढ़े का चित्त ~~प्रफुल्लित~~ प्रफुल्लित होता है। कविता का उद्देश्य सिर्फ काव्य-शास्त्रीय नियमों की अभिव्यक्ति नहीं अपितु समाज के लिए एक मनोरंजन का साधन भी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेषताएँ

(1) काव्यरूप :- मुक्तक

(2) छन्द : दोहा

(3) भाषा : ब्रजभाषा

(4) रग, राते - रंग में अनुप्रास का कुशल प्रयोग

(5) कविता के महत्व को उद्घाटित किया गया है

(6) बिहारी की समहार क्षमता का चित्रण, हर एक शब्द का महत्व है किसी भी शब्द को हटाया नहीं जा सकता

5/2
10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ जायसी कृत 'पद्मावती' से उद्धृत है।

प्रसंग :- नागमती विरह खण्ड से उद्धृत यह काव्यांश, नागमती के विरह को चित्रित करता है।

व्याख्या :- नागमती अपने विरह को बताते हुए कहती है की बारिश के बाद अब भादों का महिना लग गया है ~~बिजली सि बिजली है धूप किसी नाग के समान प्रतीत हो रही है~~। वह घर पर अकेली है और अपने आँखों से पति के आने की राह देख रही है। विरह वेदना अति तीव्र है। साथ ही बादल गरज रहे है और तेज बारिश हो रही है चारो ओर पानी समा गया है। पूरी पृथ्वी जल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नष्ट हो गई है। इससे पृथ्वी का ताप कम हो गया है।

1 विशेषताएँ

① बारहमासा विरह वेदना का वर्णन

② शुक्ल ने नागमती विरह खण्ड को हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु कहा है

③ काव्यरूप : प्रबन्धकाव्य

④ छन्द : दोहा और चौपाई की कड़वक बद्ध योजना

⑤ सूफियों के रहस्यवाद को लोकप्रचलित कथा में व्यक्त किया गया है।

⑥ रस : शृंगार रस (विरह)

⑦ गुण : माधुर्य

⑧ प्रासंगिकता : नागमती जैसा पतिव्रता और पवित्र प्रेम आज समाज में बहुत कम मि मिलेगा। किन्तु भारतीय ~~संस्कृतियों~~ समाज में आज भी ऐसे एक दो उदाहरण मिल जाएगें

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भईं विषम ज्वाल की पुंजैं।।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।
पवन पानि घनसार सँजीवनि, दधिसुत किरन भानु भइं भुंजैं।।
ए, ऊधो, कहियो माधव सों, बिरह कदन करि मारत लुंजैं।
सूरदास प्रभु को मग जोवत, अँखियाँ भईं बरन ज्यों गुंजैं।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ :- प्रस्तुत संवाद सूरदास कृत भ्रमरगीत से उद्धृत है।

प्रसंग :- गोपियाँ उद्धव से अपने प्रिय कृष्ण और उनके प्रेम के विरह को बताती हैं।

व्याख्या :- गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि जब कृष्ण उनके साथ ब्रज में थे तब प्राकृतिक सौन्दर्य उन्हें अति शीतल तथा मनमोहक लगता था। किन्तु अब वही लताएँ और फूल इन्हें अग्नि समान लग रहे हैं। साथ ही हवा भी इन्हें सब कष्ट देती है। सूरदास के शब्दों में गोपियाँ कहती हैं कि वे कृष्ण के विरह में तड़प रही हैं और उद्धव से आग्रह करती हैं कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वे उनकी वेदना को कृष्ण तक पहुँचाएं।

विशेषताएँ

① काव्यरूप : स्वयं सूरदास ने इसे लीलापद कहा है।

② छन्द : पद

③ भाषा : ब्रजभाषा

④ रागानुगा भक्ति दृष्टव्य है

⑤ रस : श्रृंगार रस

⑥ गुण : माधुर्य गुण

⑦ ध्वनि : शब्दालंकार

⑧ वक्रोक्ति और वाग्विदग्धता का कुशल प्रयोग।

⑨ सूर ने सामंतवादी माहौल में गोपियों को प्रेम की स्वतंत्रता प्रदान की यह उनकी प्रगतिशीलता को दर्शाता है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मेरे जाति-पाँति, न चहौं काहू की जाति-पाँति,
मेरे कोऊ काम को, न हौं काहूँ के काम को।
लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब,
भारी है भरोसो 'तुलसी' के एक नाम को।
अति ही अयाने उपखानो नहिं बूझें लोग,
'साह ही को गोत गोत होत हैं गुलाम को'
साधु कै असाधु कै भलो कै पोच, सोज कहा,
का काहू के द्वार परौं? जो हौं सो हौं राम को।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास कृत कवितावली के उत्तरकांड से उद्धृत है
प्रसंग :- तुलसी की वर्ण विरोधी चेतना का उत्तम काव्य। यह उद्धृत हुआ है।
व्याख्या :- कवि कहता है कि कोई मेरी जाति पाति न पूछे, न मुझे किसी की जाति आदि चाहिए। वह मेरे किसी काम की नहीं। मेरे तो प्रभु श्रीराम है मैं उनके भरोसे ही जिंदगी काट रहा हूँ आगे वे कहते है कि लोग बड़े मूर्ख है उन्हें इतना भी नहीं समझता कि जो जाति या गोत्र प्रभु का होता है वही उसके भक्त का

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होता है

विशेषताएँ

① ब्रज भाषा का उत्तम प्रयोग

② समाज की वर्ण व्यवस्था पर चोट

③ दास्य भक्ति (तुलसी) को चित्रित किया गया

④ ईश्वरीय आस्था पर अटूट विश्वास

⑤ गुण : भक्ति गुण

⑥ काव्य रूप : तीन धर्मी प्रबन्ध मुक्तक काव्य

⑦ व्यंग्यशैली का प्रयोग : गीत के सन्दर्भ में समाज को मूर्ख कहना।

Gud 6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

3. (क) 'असाध्य वीणा' पर अस्तित्ववाद तथा जेन बौद्धमत का प्रभाव कहाँ तक दिखाई देता है? विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

असाध्यवीणा ~~प्रगत~~ प्रयोगवाद के अग्रदूत अज्ञेय द्वारा जापान यात्रा के बाद लिखी गई है।

अज्ञेय पर सार्त्र और कामू की अस्तित्ववाद, इलियट के परम्परा और निर्वैयक्तिकवाद जैसे सिद्धांतों का प्रभाव रहा है। जापान यात्रा के बाद उन पर जेन बौद्धमत का भी प्रभाव रहा जो उनके काव्य में दिखाई देता है।

काव्य में कलाकार और कला के प्रति अस्तित्ववादी धारणा उजागर हुई है तथा मार्क्सवाद के उपयोगितावादी तथा सामाजिक उत्पाद जैसे विचारों का खण्डन किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

प्रियंवद का अहंशून्यता तथा आत्म-निवेदन ~~भाव~~ जिनके कारण वह वीणा साध पाता है। वह इन पंक्ति में नजर आता है

"श्रेय नहीं कुछ मेरा..."

साथ ही बौद्धमत के प्रभाव के अनुसार, बड़े-बड़े कलाकार जो कि वीणा साधने के लिए भौतिकता का प्रयोग करते हैं असफल होते हैं-

"हार गये मेरे सारे
जाने माने कलावंत..."

और वीणा को साधने की प्रक्रिया में प्रियंवद का आत्मसमर्पण और आत्मनिवेदन कहीं न कहीं बौद्धमत के प्रभाव का असर है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जैन बौद्धमत की मान्य मान्यता है कि वीणा या कला को मानसिक स्तर पर भी साधा जा सकता है। यह काव्य में स्पष्ट दिखाई देता है। प्रियवंद अपनी मानसिक यात्रा में वीणा को साधता है।

ब्रह्मस्वर के उत्पन्न होने से पर सभा पर सभी लोग अपने-अपने स्तर पर अपनी योग्यता के अनुसार उसकी प्राप्ति करते हैं। अज्ञेय के अनुसार "व्यक्ति समाज से तो नहीं किन्तु समाज में स्वतंत्र रह सकता है।।

यही भाव काव्य के अन्त में दिखाई देता है।

10/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'राम की शक्तिपूजा' में विभिन्न स्तरों पर समायोजित द्वंद्वात्मकता की पहचान कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

महाप्राण निराला द्वारा रचित कविता 'राम की शक्तिपूजा' (1936) में विभिन्न स्तरों पर विभिन्न प्रकार के द्वंद्व का समायोजन की किया गया है।

कविता का कथानक कृत्तिवास रामायण से लिया गया है, यह युद्ध के बाद संध्या का चित्रण है जो अन्धकार और प्रकाश के द्वंद्व की अभिव्यक्ति है

कविता की मूल संवेदना है शक्ति की मौलिक कल्पना (डॉ निर्मला जैन)। यहाँ शक्ति के अन्याय के पक्ष में होना न्याय और अन्याय के द्वंद्व को दर्शाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

"अन्याय जिधर है शक्ति उधर"

न्याय - अन्याय के साथ यह सत्य - असत्य तथा धर्म - अधर्म के द्वंद्व को भी अपने अन्दर समाहित किये है।

नन्दकिशोर नवल ने इसकी मूल संवेदना नारी मुक्ति को बताया है जो पितृात्मक समाज में नारी और पुरुष के अधिकारों के द्वन्द्व को दर्शाता है।

साथ ही काव्य में प्रतीकात्मक स्तर पर भारतीय स्वतंत्रता की लड़ाई की भी अभिव्यक्ति हुई है। रावण अंग्रेजों के प्रतीक में अधर्म और अत्याचार को दर्शाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसके विरुद्ध धर्म और सत्य के मार्ग पर चल रहे गांधी जी भारत की मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहे है

~~हतोत्सा~~ हतोत्साहित समाज को चेतना और शक्ति प्रदान करने के लिए योग के माध्यम से शक्ति स्रजन दर्शाया गया है।

कुल मिलाकर, राम की शक्ति पूजा विभिन्न स्तरों पर विभिन्न द्वंद्वों को अपने में समाती है।

Gm 1½

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

स्थान में प्रश्न अतिरिक्त कुछ
do not write except the number in ce)

(ग) पद्मावत अन्योक्ति है या समासोक्ति? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~शुक्ल ने~~
जब काव्य में प्रस्तुत कथा गौण हो और अप्रस्तुत कथा प्रधान हो तो उसे अन्योक्ति कहा जाता है तथा उसकी विपरीत स्थिति समासोक्ति कहलाती है।

शुक्ल ने इसे ~~अन्योक्ति~~ समासोक्ति कहा है तथा जार्ज ग्रियर्सन ने इसे अन्योक्ति माना है।

काव्य की समालोचना करने पर हम देखते हैं कि जायसी ने इसमें मूल रूप से लोकप्रचलित कथा कथा का ही सम्प्रेषण किया है।

सूफी रहस्यवाद कहीं कहीं उभकर आता है इसके अनुसार चित्तौड़ को तन, रत्नसेन को मन, पद्मावती को बुद्धि तथा नागमती

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

को दुनिया-धंधा माना गया है।
किन्तु दोनों का आपस में समझौता
करना और उनका प्रेम आदि
प्रसंग सूफी रहस्यवाद के
खिलाफ जाते हैं।
साही ने अपनी मौलिक
पुस्तक 'जायसी' में अन्योक्ति और
समासोक्ति के विवाद को ही
बेकार बताया है। उनका मत है कि
इसमें अप्रस्तुत कथा काफी गौण
है अतः यह विवाद उचित नहीं
फिर भी हमें अगर एक
को चुनना हो तो यह काव्य
समासोक्ति नजर आता है।

6½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) भ्रमरगीतसार में सूर के विरह वर्णन के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की मान्यताओं का उल्लेख करते हुए उससे अपनी तार्किक सहमति या असहमति प्रकट कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भ्रमरगीत सार के विरह वर्णन के सन्दर्भ में शुक्ल ने अपनी मान्यताएँ प्रस्तुत की है, कहीं कहीं वे सूर की आलोचना करते है तो कहीं-कहीं उनकी तारीफ करते है।

शुक्ल ने सूर के विरह वर्णन को बैठे-बिठाये का काम बताया और कहा कि ब्रज और मथुरा की दूरी उतनी नहीं थी जितनी सीता के सामने थी।

उनका यह मत पूर्णत: ठीक नहीं है। प्रेम के प्रसंग हेतु या वेदना हेतु भौगोलिक दूरी की महत्ता उतनी अधिक नहीं होती।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

~~सूर~~ क)

शुक्ल ने सूर के विरह वर्णन के सन्दर्भ में कहा है " सूर को उपमा देने की झक सी चढ़ जाती है।"

इस सन्दर्भ में हमें ध्यान रखना चाहिए कि सूर अन्धे थे, उन्हें कविताओं को पढ़ने या लिखने के सन्दर्भ में छूट नहीं थी। साथ ही उनके पास कृष्ण, राधा, गोपियों, यमुना और ब्रज क्षेत्र के अतिरिक्त कुछ नहीं था। अतः उन्हें विभिन्न उपमाओं के माध्यम से अपने काव्य की रचना करनी थी। द्विवेदी जी ने उनके अलंकार की प्रशंसा की है " सूर जब रचना करते है तो अलंकार शास्त्र उनके पीछे हाथ जोड़ कर चलने लगता है ×× ××"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

सूर के द्वारा प्रयुक्त ~~क~~ वक्रोक्ति, वाग्विदग्धता और उक्तिवैचित्र्य की प्रशंसा तो शुक्ल भी करते हैं। इनके शैली उक्तिवैचित्र्य अन्यत्र दुर्लभ है।

इनके काव्य को उपासना के काव्यों से श्रेष्ठ माना जाता है। इस मत में भी कोई विवाद नहीं है। शुक्ल भी इसके समर्थन में नजर आते हैं।

शुक्ल के शब्दों में "काव्य में अर्थग्रहण नहीं बिम्ब ग्रहण अपेक्षित है। सूर की बिम्ब कौशल क्षमता है अद्वितीय है। इनके समान बिम्ब विधान की रचना बिहारी और निराला जैसे एकाध कवि ही रच पाए।

अच्छा है

11/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) "'असाध्य वीणा' कविता मार्क्सवादी रचना-दृष्टि को खंडित करने का रचनात्मक उपक्रम है।" विचार कीजिये। 15

जापानी मिथक पर आधारित "असाध्य वीणा" एक संश्लिष्ट अर्थविधान वाली कविता है। इसमें अज्ञेय ने अपनी प्रयोगशीलता के साथ प्रगतिशीलता को भी दर्शाया है।

मार्क्सवादी विचारकों की दृष्टि में कला एक सामाजिक उत्पाद है, जिसे भौगोलिक भौतिक माध्यम झेलें बार-बार प्रयत्न से साधा जा सकता है साथ ही वह मनोरंजन की वस्तु है।

कविता में ये सारी मान्यताएँ टूटती नजर आती है प्रारंभ में राजा कहता है कि

"हार गये मेरे सारे
जाने माने कलावंत"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ [illegible] do not write [illegible] except the [illegible] number in [illegible]

प्रसिद्ध कलाविदों की पराजय का कारण है उनकी भौतिक साधना पद्धति।

अज्ञेय ने प्रियवंद को अंहशून्य और आत्मनिवेदन गुण वाला साधक बताया है जो मानसिक स्तर पर तरु को अपना अस्तित्व समर्पण करता है तथा उससे विनती करता है कि तू गा।

वीणा के बजने पर जो स्वर उच्चरित होता है वह ब्रह्मस्वर है। यह मनोरंजन की वस्तु नहीं है यह तो ऐसा स्वर है जो सभी को अपने-अपने स्तर पर अलग-अलग प्राप्त होता है और सभी लोग उसके बाद अपने-अपने कार्य में लग जाते है तथा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अज्ञेय नये युग की ओर संकेत करते हैं।

स्पष्टतः असाध्य वीणा अपनी सम्पूर्ण प्रक्रिया में मार्क्सवादी विचारों का खण्डन कर भारतीय मान्यताओं और विचारों की स्थापना करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "नागार्जुन जनजीवन, धरती व मानव प्रेम के पुजारी हैं।" विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

नामवार सिंह ने नागार्जुन को आधुनिक काल का प्रतिनिधि जन कवि कहा है। उनकी प्रमुख रचनाएँ : हरिजनगाथा, बादल को घिरते देखा है, अकाल और उसके बाद।

इसके अतिरिक्त उन्होंने किसानों, रिक्शा खींचने वाले जैसे मार्मिक प्रसंगों पर काव्य रचा है।

उनकी कविता तुलसी के बाद सबसे ज्यादा लोक प्रचलित रही क्योंकि वे जनता के प्रति प्रतिबद्ध रहे और धरती व मानव प्रेम के पुजारी रहे।

बेलछी काण्ड के बाद उनकी मनोदशा कुछ इस प्रकार थी

"रोता हूँ लिखता जाता हूँ
कवि को बेकाबू पाता हूँ",

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इसके बाद उन्होंने हरिजन गाथा की रचना की और मानवता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाया। काव्य में उन्होंने दलितों के दिलों और मानसिक स्थिति का मार्मिक चित्रण किया साथ ही वर्ग संघर्ष के संकेत भी दिये।

'अकाल और उसके बाद'

काव्य में मानव जीवन की समस्या का चित्रण तो किया साथ ही सम्पूर्ण चराचर को अपनी संवेदना में सम्मिलित कर लिया।

उनके प्राकृतिक प्रेम और धरती माता के प्रति चेतना उनकी कविता 'बादल को घिरते देखा है' में देखी जा सकती है।

इनमें वे हिमालय का आँखों देखा वर्णन करते है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थान में प्रश्न
तिरिक्त कुछ

not write
except the
number in

नागार्जुन अपने विचारों और जनसमुदाय में मतभेद होने पर जनसमुदाय के पक्ष में नज़र आते हैं

"क्या दक्षिण क्या वाम
जनता को रोटी से काम"

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) कौन कहता है, जीवन-संग्राम में वह हारा है। यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं? इन्हीं हारों में उसकी विजय है। उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय-पताकाएं हैं। उसकी छाती फूल उठी है, मुख पर तेज आ गया है।

व्याख्या :- लेखक संख्यात्मक तरीके से नायक की विजय को उनके सामने प्रस्तुत करता है पहले पंक्त युद्ध कर भी बताते है कि समाज मे चल रहे कोलाहर हार के संकेत नहीं है यही यब तो विजय संकेत को दर्शाते है

1/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

विशेषताएँ

(1) संग्रात्मक शैली का कुशल प्रयोग
(2) खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग।
(3) प्रश्नवाचक शैली दृष्टव्य है।
(4) तत्समनिष्ठ शब्दों का प्रयोग।
जैसे : संग्राम, शत्रु
(5) युद्ध के सन्दर्भ का चित्रण।

1/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) विद्यापति की चर्चा होते ही कविवर 'दिनकर' का एक प्रश्न बरबस सामने आकर खड़ा हो जाता था– "विद्यापति कवि के गान कहाँ?" बहुत दिनों बाद मन में उलझे हुए उस प्रश्न का जवाब दिया– ज़िंदगी-भर बेगारी खटनेवाले, अपढ़ गँवार और अर्धनग्नों में, कवि! तुम्हारे विद्यापति के गान हमारी टूटी झोंपड़ियों में ज़िंदगी के मधुरस बरसा रहे हैं।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

शैला आंचल

व्याख्या :- लेखक कहता है कि विद्यापति के बारे में चर्चा करने पर उन्हें दिनकर का प्रश्न याद आ जाता है ~~कवि~~ लेखक आगे दिनकर के प्रश्न का मन में जवाब देते हैं कि विद्यापति ~~का~~ काव्य गरीबों को ~~अमरत~~ अमृत समान सुधा पिला रहा है।

2/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

...ान में प्रश्न ...तिरिक्त कुछ

...not write ...cept the ...mber in

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेषताएँ

① मनोवैज्ञानिक शैली का उत्तम प्रयोग

② अर्थ सम्प्रेषण के लिए विभिन्न चिन्हो जैसे ',' '" "' का उत्तम प्रयोग

③ प्रश्नवाच्यक शैल का कुशल प्रयोग हुए हुए है।

④ मधुरता बरता। रहे है एक प्रतीक रूप में सुख प्रदान कर रहे है

⑤

2/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) युद्ध क्या गान नहीं है? रूद्र का शृंगीनाद, भैरवी का तांडव-नृत्य और शस्त्रों का वाद्य मिलकर भैरव संगीत की सृष्टि होती है। ध्वंसमयी महामाया-प्रकृति का वह निरंतर संगीत है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसाद कृत स्कन्दगुप्त से उद्धृत है।

प्रसंग :- देवसेना अपनी सखी से युद्ध और गीत के सम्बन्ध को बताती है जब विजया देवसेना के गीत गाने के प्रसंग पर आश्चर्यचकित होती है।

व्याख्या :- देवसेना कहती है कि युद्ध भी एक गीत के समान है। जिस प्रकार तांडव नृत्य होता है और शस्त्रों के प्रयोग से आवाज उत्पन्न होती है वे वाद्ययंत्र की भांति है और विध्वंस की प्रक्रिया भी एक प्रकार से गीत है।

Avg. (?)

4/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेषताएँ

1. संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग प्रसाद की विशेषता रही है।
2. गीत और युद्ध का सम्बन्ध बताया गया है।
3. उद्देश्य प्रधान नाटक का अंश
4. प्रश्नवाचक शैली उपलब्ध है
5. प्रसादान्त नाटक है।
6. प्रतीकात्मक भाषा : शस्त्रों का गायन .

4/10

प्रसाद की युद्ध-संबंधी दृष्टि (अहिंसा/हिंसा) को स्पष्ट करें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright.– Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्व है। कभी एक क्षण के लिए भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिए व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ मोहन राकेश कृत 'आषाढ़ का एक दिन' से उद्धृत है।

प्रसंग :- मातुल और मल्लिका के मध्य संवाद में ये मातुल के कथन है।

व्याख्या :- मातुल कहता है कि राजनीति करना और कविता लिखना समान नहीं। राजनीति में एक-एक क्षण महत्वपूर्ण होता है उसमे भूल होने से हानिकारक सिद्ध होता है। राजनीति में बने रहने के लिए व्यक्ति को हर-पल सजग रहना पड़ता है।

4

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेषताएँ

(1) स्थिति प्रधान नाटक का अंश।

(2) राजनीति और साहित्य के द्वंद्व को प्रदर्शित किया गया है।

(3) साहित्यकार के जीवन की दुविधा को अंकित किया गया है।

(4) मल्लिका के ~~स~~ निस्वार्थ प्रेम को दर्शाया गया है।

(5) समय के महत्व को समाज के सामने लाया गया है।

(6) खड़ी बोली हिन्दी का सरल, सहज और प्रवाहमयी प्रयोग

प्रासंगिकता: आज भी व्यक्ति के जीवन में समय का महत्व है। ~~और~~

4/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) बच्चों की शक्लें और शरारतें तो बहुत पहचानी सी लगती हैं पर गोलगप्पे खाती हुई उनकी मम्मी अजनबी है, क्योंकि उसकी आँखों में मासूमियत और गरिमा से भरा प्यार नहीं है। उसके शरीर में मातृत्व का सौंदर्य और दर्प भी नहीं है। उसमें सिर्फ एक खुमार है और एक बहुत बेमानी और पिटी हुई ललकार है; जिसे न तो नकारा जा सकता है और न स्वीकार किया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खाई हुई उम्मीद

व्याख्या :- लेखक उपरोक्त गद्य में बच्चे और उनकी माता के चरित्र का चित्रण कर रहे हैं। बच्चों की मासूमियत और निश्वार्थ भाव से सारे बच्चे समान प्रतीत होते हैं। यहां उनकी माता के चरित्र को, जो मातृत्व को धारण नहीं करती दर्शाया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेषताएँ

(1) भाषा : खड़ी बोली हिन्दी

(2) बचपन और बच्चों के भावों की समझ।

(3) अलंकार का कुशल प्रयोग

(4)

1/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) मोहन राकेश चाहते थे कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करें। इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वे कहाँ तक सफल हो सके? 20

उत्तर :-

मोहन राकेश का पहला नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' भारतीय रंगमंच और नाटक को जोड़ने वाली एक क्रांतिकारी रचना थी।

मोहन राकेश की रंगमंच की दृष्टि को मील का पत्थर माना जाता है।

उनके नाटक की विशेषताएँ जो उसे रंगमंच के लिए अनुकूल बनाती है।

(1) सम्पूर्ण नाटक में एक ही दृश्य है, मल्लिका का घर और अंक बदलने के साथ उसमें थोड़े बहुत परिवर्तन किये गए है।

मोहन राकेश की रंग-दृष्टि की और चर्चा करें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(2) पात्रों का कथनों के साथ अपने हाव-भाव का भी प्रयोग, इनकी जानकारी नाटक में दी गई है
जैसे: "मल्लिका अपना होंठ काट लेती है।"

(3) रंगमंच सम्बंधी निर्देश, कब रुकना है, कहाँ और क्या परिवर्तन करना है इत्यादि सब कुछ नाटक में दिया गया है।

(4) कालिदास जैसे ऐतिहासिक पात्र का प्रयोग ताकि अनावश्यक चरित्र योजना न करनी पड़े।

(5) इसके रंगमंच में एक घंटे के अन्दर किया जा सकता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(6) पात्रों की भीड़ लेखक ने इकट्ठा नहीं की। वर्गसंघर्ष हेतु आषिका, नौकरशाह के व्यवहार हेतु अनुस्वार आदि

(7) आकस्मिकता का कुशल प्रयोग दर्शक को आकर्षित करता है जैसे: बच्चे का रोना जब कालिदास नयी जिंदगी की बात करता है।

(8) पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग।

स्पष्टतः मोहन राकेश अपने उद्देश्य में सफल हुए और उनके योगदान से हिन्दी में नाटक और रंगमंच की दूरी समाप्त हो सकी।

10/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) आंचलिक उपन्यासों में 'मैला आंचल' के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास के रूप में समादृत होने में उसकी भाषा-शैली की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शिवपूजन सहाय के देहाती दुनिया से आँचलिक उपन्यास की शुरुआत (सांकेतिक) मानी जाती है।

प्रमुख आंचलिक उपन्यास

रेणु : मैला आँचल

नागार्जुन : बलचनमा

इनके अलावा, गंगा मैया, सागर लहरें और मनुष्य आदि।

'मैला आँचल' के आँचलिक उपन्यास होने में उसकी भाषा का योगदान सर्वश्रेष्ठ रहा है।

मैला आँचल की भाषाई विशेषताएँ :

(1) पात्रों के अनुसार भाषा, गाँवों के व्यक्तियों के लिए ग्रामीण भाषा तथा ~~प्रशा~~। डॉ प्रशांत के लिए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिन्दी तथा तत्सम भाषा
देशज शब्दों की बहुलता
जैसे : गमकौआ साबुन

(3) अंग्रेज़ी शब्दों का गांवों में प्रयोग होने वाला विकृत रूप
जैसे : भैसन्पररमन (vice chairman).
रायबरेली (library)

(4) नाद सौन्दर्य तथा ध्वनि मैत्री का प्रयोग
जैसे : गिड़, गिड़, गिड़, धा, गिड़धा...

(5) मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग ने इसकी आंचलिकता को बढ़ाया है।
जैसे : "माघ का जाड़ा तो बाघ को भी ठंडा कर दे"।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space) 6

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

लोक संस्कृति और लोकगीतों की समाप्ति, जाट जाटिन का खेल, बिदापद के नृत्य, बीजक।

(7) गाँव में प्रचलित जाति के आधार पर समूहों का बटवारा और उनके मध्य संघर्ष का चित्रण।

स्पष्टतः मैला आँचल की भाषा शैली इसे आँचलिक उपन्यास की परम्परा में सर्वश्रेष्ठ बनाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दिव्या' उपन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मार्क्सवादी विचारक यशपाल ने दिव्या को बौद्धकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर रच कर सूक्ष्म स्तर पर अपने विचारों का सम्प्रेषण किया है।

उपन्यास का महत्व अनेक कारणों से है-

① लेखक ने दास प्रथा का मार्मिक चित्रण किया है जहाँ मालिकों को अपने बच्चों पर भी अधिकार नहीं

② नारी समस्या का तथा उसके समाधान का चिंतन, दिव्या के माध्यम से यशपाल ने समाज में नारियों की भोगमूलक

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्थिति सर का चित्रण किया है
उपन्यास में बौद्धमतों के नियमों
और मान्यताओं पर जोर

(4) चारवाक दर्शन के माध्यम से
इहलोक के महत्व को स्थापित
करने की कोशिश।

(5) मनुष्यों के धार्मिक बन्धन, सामाजिक
आडम्बरों पर विचार कर उनके
कारणों को बता कर उनमें
परिवर्तन लाने की कोशिश।

(6) न्याय व्यवस्था का सत्ता के अनुसार
कार्य करना दर्शाया गया है।

(7) समाज में योग्य होना ही सबकुछ
नहीं। पृथुसेन के माध्यम से
दर्शाया गया है कि किस प्रकार
उसे अपने अधिकारों के लिए
संघर्ष करना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अंशुमाला खण्ड में कला के महत्व और उसको ग्रहण करने के लिए परिश्रम की महत्ता बताई गई।

इन सब महत्वपूर्ण समस्याओं और इनके उपन्यास में विचारों ने ही इसे महत्वपूर्ण बनाया है किन्तु इसकी ख्याति का मूल कारण दिव्या है। उपन्यास में नारी का एक नायक होना, साथ ही नारी चिंतन और अन्त में समता के अधिकार हेतु दिव्या को चुनने की स्वतंत्रता इसे सबसे महत्वपूर्ण बनाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation